मीराबाई का जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म सन् **1498** के आस-पास माना जाता है। उनका ववाह बाल्यावस्था में ही महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र 'कुंवर भोजराज' के साथ सन् **1516** में हुआ। कतु कुछ ही समय के बाद उनके पति का देहांत हो गया। पति के न रहने पर मीरा ने अपना मन एकनिष्ठ भाव से 'कृष्ण' (गरधर नागर) में लगा दिया। वे संसार की ओर से वरक्त हो गयीं और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। कहते हैं क मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना, राज परिवार को अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने कई बार मीराबाई को वष देकर मारने की को शश की। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह वृंदावन चली गईं। मीरा बाई की रचनाओं में एक ओर जहाँ श्री कृष्ण के निर्गुण रूप का वर्णन मलता है, वहीं दूसरी ओर इन्होनें कृष्ण के सगुण रूप का भी गुणगान कया है।

संत रैदास की शष्या मीरा के पद पूरे उत्तर भारत सहित गुजरात, बिहार और बंगाल तक प्रच लत हैं। मीरा बाई की क वताएं हिंदी तथा गुजराती दोनों ही भाषाओं में मलती हैं।

रचनाएँ

मीराबाई के नाम से निम्न ल खत कृतियाँ प्रच लत हैं-

(1) नरसी जी रो माहेरो **(2)** गीतगो वंद की टीका

(3) रागगो वंद **(4)** सोरठ के पद

(5) मीराबाई का मलार। **(6)** गर्वागीत

(7) राग- वहाग **(8)** मीराबाई की पदावली

कंतु उपरोक्त सूची में से एकमात्र प्रामा णक और उल्लेखनीय कृति 'मीराबाई की पदावली' है जो परशराम चर्तुवेदी दवारा दर संपादित है। शेष

मीरा के पद

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।
बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।

मीरा के पद

इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं क आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं क जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साडी के कपडे को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नर सिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था ,हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात भक्त के भी सारे दुःख हर

मीरा के पद

स्याम म्हाने चाकर राखो जी, गरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।

चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली मैं , गो वन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।
मीराँ रा प्रभु गरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

मीरा के पद

इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती है क हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फ़र चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती है क नौकर बनकर मैं बागीचा लगाउंगी ता. क सबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूं। मीरा कहती है क वृन्दावन की सकरी ग लयों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करुंगी। मीरा का मानना है क नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला - उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

मीरा के पद

मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं क उन्होंने पीले वस्त्र धारण कये हुए है ,सर पर मोर के पखो का मकट वराजमान है और गले में वैजन्ती फल की माला को धारण कया हुआ है।

वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है।

मीरा कहती है क मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाउगी और कसम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रय के दर्शन करुगी अथात श्री कृष्ण के दर्शन के लए साज श्रगार करुगी। मीरा कहती है क है !मेरे प्रभु गरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लए इतना बेचैन है क वह सबह का इन्तजार नही कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के कनारे उसे दर्शन दे दे।

भक्ति-भावना :

मीरा की रचनाओं में विनय की भावना प्रबल है। संसार की कोई भी आँधी मीरा की भक्ति-भावना को उखाड़ने में समर्थ नहीं है। मीरा की भक्ति मात्र दैन्यपूर्ण अभिव्यक्ति नहीं अपितु सांसारिक घोर विषमताओं एवं कष्टों को झेलने की दुर्दम्य साहस का प्रतीक बन गई है। निम्न लिखित पद में मीरा स्पष्ट करती है कि 'राणा' के विष (जहर) ने मुझे और भी शुद्ध कर दिया ठीक वैसे ही जैसे सोना, आग में जलकर और भी शुद्ध हो जाता है -

"राणा जी थे जहर दियो म्हे जाणी ।
जैसे कंचन दहत अगनि में, निकसत बाराबाणी ॥ "

(उक्त छंद में 'बाराबाणी' का अर्थ शुद्ध सोना है।)

कृष्ण प्रेम, कृष्ण सौंदर्य, कृष्ण लीला आदि विषयों को अपने पदों में प्रधानता देकर मीरा ने मधुर रस और मधुर भक्ति की मनोरम व्यंजना की है। वे अपने गिरधर - गोपाल के प्रति पूरी तरह से एकनिष्ठ होकर, जिसके सर पर मोर का मुकुट है, मात्र उसे ही अपना स्वामी स्वीकार करती हैं।

काव्य-भाषा :

मीरा ने चमत्कार प्रदर्शन वाली अ भव्यंजना से अपने को दूर ही रखा है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है उन्होंने राजस्थानी, ब्रज, पंजाबी एव गुजराती का प्रयोग वषय एव अवसर के अनकूल कया है। डा. सनीतिकुमार चटर्जी का मत है क मीरा की मलभाषा तो राजस्थानी ही थी पर लोक- प्रच लत होने से उसका रूप परिवर्तित होता गया। इस प्रकार हम देखते है क मीरा की साहित्यिक- भाषा, म श्रत भाषा रही है। साथही, उनकी भाषा में कोमलता, सहजता, मधुरता तथा स्पष्टता का यथो चत समन्वय दिखायी देता है।

प्रतीक योजना :

मीरा का नारी सुलभ प्रेम, दाम्पत्य के भावों को प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कहने में सु वधा महसूस करता है